युद्ध का आरंभ —

षड्यंत्रों नवाब ने मीर जाफर को अपनी सेना का मुख्य सेनापति नियुक्त कर दिया एवं युद्ध की तैयारियां प्रारंभ कर दीं। 23 जून 1757 को युद्ध आरंभ हुआ नवाब की ओर से मोहनलाल एवं मीर मदन नामक अधिकारियों ने वीरतापूर्वक युद्ध किया लेकिन सैनिक अधिकारी जो मीर जाफर के षड्यंत्र में शामिल थे, पीछे भागने लगे। षड्यंत्रों ने नवाब को हरा दिया।

युद्ध समाप्त हुआ एवं मीर जाफर को बंगाल का नवाब घोषित किया गया। कंपनी को इस कार्य के बदले 24 परगने की जमींदारी एवं एक करोड़ सत्तर लाख रुपए दे दिए गए। कंपनी के सेवकों को भी कीमती उपहार एवं नकद राशि दी गई। यह भी निश्चित हुआ कि भविष्य में कंपनी एवं उसके अधिकारियों को निजी व्यापार के लिए चुंगी नहीं देनी पड़ेगी।

प्लासी के युद्ध का महत्त्व — प्लासी के युद्ध को सैनिक दृष्टि से नहीं अपितु राजनीतिक परिणामों की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

(1) बंगाल में अंग्रेजों की विजय का मार्ग प्रशस्त हो गया और अन्ततः संपूर्ण भारत पर विजय का मार्ग भी इसी युद्ध के आधार पर प्रशस्त हुआ।

(2) कंपनी की व्यापारिक सुविधाएँ बढ़ा दी गईं। कंपनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा में मुक्त व्यापार का निर्विवाद अधिकार मिल गया।

(3) राजनीतिक रूप से बंगाल का नवाब ऐसे व्यक्ति को बनाया गया जो अंग्रेजों के प्रभाव में था। अंग्रेज वास्तविक शासक नहीं थे किंतु शासनसत्ता इनके निर्देशानुसार ही चलती थी।

(4) इस युद्ध से अंग्रेजों को भारतीयों की राजनीतिक एवं सैनिक दुर्बलताओं का पता लग गया।

(5) बंगाल पर विजय के साथ अंग्रेज अपनी नौसेना का कुशलता के साथ प्रयोग कर सकते थे। नदियों के माध्यम से दिल्ली तक भी आया जा सकता था।

(6) क्लाइव ने प्लासी के युद्ध के उपरांत हुए राजनीतिक परिवर्तन को 'बंगाल की प्रथम क्रांति' कहा है।

(7) प्लासी के युद्ध का महत्त्व व्यापारिक ही रहा। अंग्रेजों को व्यापारिक सुविधाएँ प्राप्त हो गई थी वे बंगाल के स्वामी नहीं बने थे।

(8) इस युद्ध के पश्चात, कंपनी पहले जमींदार बनी, बाद में जमींदार से जागीरदार एवं अंततः बंगाल की दीवानी की स्वामिनी बन गई।

(9) इस युद्ध का अंग्रेजों के लिए दुर्भाग्यपूर्ण पक्ष कंपनी के सेवकों के नैतिक जीवन में गिरावट रहा। कंपनी में भ्रष्टाचार व्याप्त हो गया।

(10) कंपनी को कलकत्ता के पास चौबीस परगना की जमींदारी मिली। बंगाल से प्राप्त भारी राजस्व के सहारे अंग्रेजों ने शक्तिशाली सेना खड़ी की और इसी से शेष भारत की विजय का खर्च उठाया।

युद्ध की प्रकृति :-

(1) इतिहासकार के. एम. पणिक्कर ने कहा है कि "प्लासी का युद्ध एक हुल्लड़ एवं भगदड़ था, युद्ध नहीं।" सैनिक दृष्टि से नवाब की सेना अंग्रेजों की सेना से बहुत बड़ी थी किंतु षड्यंत्रों के कारण अधिकांश सेना ने युद्ध में भाग नहीं लिया।

पणिक्कर ने पुनः लिखा है कि "प्लासी का युद्ध एक ऐसा सौदा था जिसमें बंगाल के धनवान सेठों एवं मीरजाफर ने बंगाल को अंग्रेजों के हाथों में बेच दिया।"

(2) अक्षयकुमार मित्र ने कहा है कि "प्लासी का युद्ध एक महान विश्वासघात था।"

(3) सर यदुनाथ सरकार ने लिखा है कि "23 जून 1757 को भारत में मध्य युग की समाप्ति हुई एवं आधुनिक युग आरंभ हुआ।"